RNI No.-MAHBIL/2016/66409
Postal Registration No.-PCE / 089 / 2016-2018
License to Post without
prepayment No.-WPP-255/31.12.2018

BJS
Bharatiya Jain Sanghatana

# भारतीय जैन संघटना

# समाचार

श्री शांतीलाल मुथ्था
संस्थापक

Editor - Prafulla Parakh

वर्ष 2 अंक 3 | मूल्य - रू.1/- | मार्च 2017 | पृष्ठ - 8

राष्ट्रीय अध्यक्ष की कलम से .....2

मंथन: जल ही जीवन है .....3

अकाल मुक्त महाराष्ट्र .....4

बीजेएस गतिविधियाँ .....5

प्रतिभाएँ-जो हमारी प्रेरणा के स्त्रोत हैं .....6

अल्पसंख्यक सूचनाएँ,
गतिविधियाँ एवं समाचार .....7

# राष्ट्रीय अध्यक्ष की कलम से



प्रिय आत्मजन,

ऋतु चक्रों का स्वागत, सूर्य भ्रमण तथा ऋतुओं के आगमन या प्रस्थान के उत्सव, देश की संस्कृति का पौराणिक काल से महत्वपूर्ण हिस्सा रहे हैं, जो उमंग एवं उत्साह भरने के साथ मानव जीवन को महकाते हैं. फरवरी माह का प्रारम्भ 'बसंतपंचमी' से हुआ. हरी चुनरिया औढ़े धरती माँ के श्रांगारिक रूप का आकर्षण हमारे लिए क्रमशः घटता जा रहा है क्योंकि हमें बसंतपंचमी से अधिक अब 'वेलेंटाईन डे' की प्रतिक्षा रहती है. विदेशी एवं पाश्चात्य संस्कृति से आयातित इस उत्सव के प्रभाव से, 14 फरवरी को ही प्रतिवर्ष मनाए जाने वाले राष्ट्रीय उत्सव 'शहीद दिवस' को हम लगभग विस्मृत कर चुके हैं. देश को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति दिलाने हेतु इस दिन शहीद भगतसिंह एवं राजगुरु फांसी के फंदे पर झूल गए थे. इतिहास के पन्नों में जिनकी शहीदी दर्ज ही नहीं हो सकी ऐसे असंख्य स्वतंत्रता सेनानियों को नमन तथा स्मरण कर, हम उन्हें हम श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं.

परिवर्तनों के फलस्वरूप हो रहे सांस्कृतिक प्रहारों के कारण क्या हम हमारी मूल संस्कृति से विमुख तो नहीं हों जायेंगे ? यह हमारी चिंताओं का कारण है जिस पर गंभीर चिंतन आवश्यक है. सांस्कृतिक प्रहारों को रोकना हमारे लिए संभव न हो किन्तु उनके भारतीयकरण के प्रयास तो किए ही जा सकते हैं. अहमदाबाद में हुए एक ऐसे ही प्रयास की चर्चा सहर्षता के साथ युवा मित्रों से करना चाहता हूँ. अहमदाबाद के जे.जी.कॉलेज में 500 विद्यार्थियों के माता-पिता को 'वेलेंटाईन डे' पर आमंत्रित किया गया व उनका पाद-प्रक्षालन कर, उनका श्रेष्ठ मित्र बने रहने का संकल्प उनकी संतानों ने लिया. हमारे सांस्कृतिक एवं सामाजिक मूल्यों के संरक्षण में यह निश्चित ही अद्वितीय प्रयास है.

मित्रों! सम्पूर्ण ब्रह्मांड जिसका एक भाग हमारी पृथ्वी भी है, पंचतत्व से निर्मित है. पंचतत्व का एक तत्व 'जल' है. जल मानव ही नहीं अपितु सृष्टि के प्रत्येक जीव एवं वनस्पति हेतु भी आवश्यक है. हमारे देश की कृषि आधारित अर्थव्यवस्था में 'जल' का विशेष महत्व है. क्या पृथ्वी पर जल पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है ? जल की प्राकृतिक रूप से आवश्यक आपूर्ति क्या अविरत रूप से होती है ? प्रतिवर्ष देश के किसी न किसी भाग में सूखा या अकाल की स्थिति क्यों बनी रहती है व इसके क्या कारण हैं ? क्या हमें जल संसाधनों के संरक्षण एवं जल उपभोग में आवश्यक दक्षता प्राप्त करना अब भी शेष है. माँ स्वरूप नदियां प्रकृति का वरदान हैं किन्तु इन जल वाहिनियों की क्षमताओं का भरपूर उपयोग उपलब्ध तकनीकी से संरचनात्मक विकास द्वारा कितना हुआ है और कितना होना शेष है ? जल देश की विकट समस्या है, जिसका समाधान क्या राजनीतिक एवं सामाजिक प्रयासों से संभव है ? ऐसे अनेक यज्ञ प्रश्न हमारे समक्ष हैं, जिनका उत्तर खोजना हमारा कर्तव्य है.

भगवान महावीर ने समाज की अवधारणा एवं महत्व को जन-जन तक ले जाने हेतु जिन सामाजिक सिद्धांतों को प्रतिपादित किया उनमें एक "अहिंसा" है. 2600 वर्ष पूर्व भ. महावीर ने मानव के शांतिमय तथा विकासशील जीवन की संकल्पना में 'अहिंसा' को जिस सूक्ष्म स्वरुप में प्रस्तुत किया उसमें समस्त जीवों के प्रति अहिंसा भाव के अतिरिक्त पर्यावरण की सुरक्षा भी समाहित है. यदि हमने भ.महावीर की 'अहिंसा' के सिद्धांत को व्यापक एवं सही अर्थ में समझा होता तो संभवतः आज जल 'जल' ही रहता 'संकट' नहीं. भ. महावीर की अहिंसा को वर्तमान सन्दर्भों में समझना व जन-जन तक पहुँचाना अब अधिक प्रासंगिक एवं अनिवार्य है. भा.जे.सं. भ.महावीर की अहिंसा को आत्मसात करते हुए आ. मुथ्थाजी के नेतृत्व में विभिन्न योजनाओं पर कार्यरत है. इस अंक में हम 'जल' विषय पर आपसे चर्चा करने के साथ महाराष्ट्र अकाल मुक्ति अभियान पर प्रकाश डाल रहे हैं.

**प्रफुल्ल पारख**
राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय जैन संघटना


**संपादक**
**प्रफुल्ल पारख**, पुणे

**कार्यकारी संपादक**
**निरंजन कुमार जुवाँ जैन**, अहमदाबाद

**सदस्य**
**कैलाशमल दुगड़**, चैन्नई **सुरेश कोठारी**, अहमदाबाद **सुदर्शन जैन**, बड़नेरा, **वीरेंद्र जैन**, इंदौर
**महेश कोठारी**, गोंदिया, **संजय सिंघी**, रायपुर, **राजेंद्र लुंकड़**, इरोड़

# जल ही जीवन है

मंथन

ब्रह्मांड, पृथ्वी सहित समस्त सृष्टि एवं सजीव तथा निर्जीव सभी जीवों की रचना पंचतत्व से हुई है. मानव जीवन एवं अन्य सभी जीवों की उत्पत्ति से लेकर उनके क्रमिक विकास की यात्रा मे एक आवश्यक तत्व के रूप में जल की अहम् भूमिका है, जो पंचतत्वों में से एक है. पृथ्वी के निर्माण में भी जल का भाग 70% प्रतिशत है व इसी तरह मानव शरीर भी जल से ही निर्मित है. वर्षा, भूमिगत स्त्रोत, नदियां, तालाब, झील, कुओं तथा सागर आदि विविध स्त्रोतो से जल की विविध स्वरूपों में उपलब्धता उसके गुणधर्म की कहानी स्वयं कहते हैं. मनुष्य को जल के उदार गुणों से बोधगम्यता, समायोजन एवं सहजता का पाठ सीखना चाहिए.

जल हे तो जीवन है, क्योंकि जल के बिना जीवन संभव ही नहीं है. जल संबंधी मामले हम सभी को प्रभावित करते हैं जैसे महिलाओं का ग्रामीण क्षेत्र में प्रतिदिन दूर दराज़ से जल लेकर आना , अंतर्राष्ट्रीय नदियों पर राजनीति या फिर ध्रुवों के पिघलने से समुद्र का स्तर बढ़ना आदि हो. सम्पूर्ण विश्व में 120 करोड़ से अधिक मनुष्यों को सुरक्षित एवं शुद्ध जल उपलब्ध नहीं होता जो जीवाणुओं तथा औद्योगिक प्रदूषण से मुक्त हो. यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि विज्ञान की अद्वितीय प्रगति के उपरांत भी, विश्व की 40 प्रतिशत जनसंख्या को स्वच्छता एवं सफाई हेतु पर्याप्त जल उपलब्ध नहीं है. पुनर्प्राप्त होने वाला जल स्वाभाविक रूप से सीमित मात्रा में है. सम्पूर्ण विश्व में जल की उपलब्धता आज भी उतनी ही है जितनी की दो हजार वर्ष पूर्व थी. यह भी वास्तविकता है कि पृथ्वी पर उपलब्ध कुल जल का 3% ही शुद्ध है जिसका भी एक तिहाई भाग अगम्य (inaccessible) है.

**जल प्राप्ति एक सीमा तक ही संभव है. उपलब्धता के अनुरूप हमें जल उपयोग में निपुणता हासिल करनी ही होगी. यह मानव का स्वभाव है कि उसे वस्तु का मूल्य उसके अभाव में ही समझ में आता है. हम जल का मूल्य समझें, इससे पूर्व कि नदियां, तालाब, कुएँ, जलाशय पूर्णतः सूख जाएं. एक अनुमान के अनुसार वर्ष 2045 तक देश की एक तिहाई जनसंख्या दीर्घकालिक जल संकट का सामना करने को विवश होगी.**

विश्व की कुल जनसंख्या का 5वां भाग ऐसे क्षेत्रों में जीवन-यापन करता है जहां प्राकृतिक रूप से जल की उपलब्धता ही दुर्लभ है. साथ ही संसाधनों के पर्याप्त संरचनागत (Infrastructural) बुनियादी विकास के अभाव में विश्व की एक चौथाई जनसंख्या जल संकट का सामना आज भी करती है. जल संग्रह हेतु नए बांधों के निर्माण व जल संग्रहण क्षमताओं के विस्तारीकरण के प्रयास सम्पूर्ण विश्व में विकसित व विकासशील देशों द्वारा किए जा रहे हैं, किन्तु पिछले कुछ वर्षों में, जनसंख्या वृद्धि, गहन औद्योगीकरण, कृषि क्षेत्र का विस्तार एवं नित बदल रहे जीवन-यापन के तौर तरीकों आदि कारणों से जल की मांग बढ़ती ही जा रही है. संभावना है कि आने वाले समय में विशेषकर बंजर एवं तटीय क्षेत्रों तथा बड़े शहरों में जल संकट गहराता जाएगा.

भारत में 1947 में प्रति व्यक्ति औसत उपलब्ध जल की मात्रा 6008 क्युबिक मीटर थी जो वर्ष 1951 में घट कर 5177 व 2001 में 1820 रह गई. 10वीं योजना के मध्यावधि मूल्यांकन अनुसार वर्ष 2025 तक प्रति व्यक्ति औसत 1340 व वर्ष 2050 में 1140 क्युबिक मीटर रह जाएगी. Tata Institute of Social Sciences के अनुसार देश के सभी बड़े शहर जल अभावग्रस्त हैं. जल की न्यूनता (Deficiency) मुंबई में 43.3%, चेन्नई 53.8%, कोलकता 44% व इंदौर में 72.8% है. मध्य व दक्षिण भारत में उत्तर भारत के मुक़ाबले अधिक जल न्यूनता पाई गई है.

भारत देश की अर्थव्यवस्था का आधार कृषि है. प्राचीन काल से ही देश का कृषक मौसम एवं भाग्य के सहारे रहता आया है. किन्तु पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि विकास को लक्ष्य में लिए गया. देश की बड़ी एवं छोटी नदियों व तालाबों पर बांध निर्माण कर नहरों द्वारा सिंचाई हेतु जल उपलब्ध कराने का लक्ष्य रखा गया. वर्ष 1960 के पश्चात भारतीय कृषि ने अविरत प्रगति की व अन्न की समस्या से जूझने वाला देश अन्न के मामले में आत्मनिर्भर बना. इन सब प्रयासों के उपरांत भी जल संबंधी समस्याएँ बनी हुई हैं, क्योंकि कि देश के सम्पूर्ण भौगोलिक क्षेत्र में सिंचाई की पर्याप्त व्यवस्था करना कठिन ही नहीं असंभव कार्य है. औद्योगिक प्रगति व जनसंख्या वृद्धि के साथ जल संकट किसी न किसी स्वरूप में देश के विविध भागों में बना ही रहता है जिसका विपरीत प्रभाव मानव जीवन-यापन एवं कृषि दोनों पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है. देश में हुए जनसंख्या विस्फोट, गहन औद्योगीकरण व बढ़ते प्रदूषण ने समस्या को अधिक गहराया है. ग्लोबल वार्मिंग के कारण वर्षा की अनियमितता एवं अनावृष्टि अब सामान्य सी बात है. ग्लोबल वार्मिंग के कारण ही अतिवृष्टि भी हम पिछले कुछ वर्षों से अनुभव कर रहे हैं किन्तु अपर्याप्त संग्रहण क्षमताओं का ही परिणाम है कि जल बह कर समुद्र में पहुँच जाता है और इस अपव्यय पर हमारा नियंत्रण ही नहीं हैं.

सरकारों तथा प्रशासन द्वारा जल संग्रह हेतु किए जा रहे संरचनागत विकास व अन्य प्रयासों के अतिरिक्त हमारे द्वारा सामाजिक स्तर पर प्रयास किए जाने की प्रबल आवश्यकता है. प्रकृति विशाल एवं विराट है जिसकी थाह पाना मनुष्य के बस की बात नहीं है किन्तु वर्षा के रूप में प्राप्त जल का योग्य उपयोग भूगर्भीय जल क्षमताओं के विकास से संभव है. हम हमारी आदतों व जीवन-यापन पद्धति में परिवर्तन कर जल संकट को एक सीमा तक हल कर सकते हैं, बशर्ते कि जल का अपव्यय रोकने के साथ, योग्य उपयोग को सामाजिक उत्तरदायित्व समझा जाए. महाराष्ट्र का मराठवाड़ा क्षेत्र गत अनेक वर्षों से पड़ रहे सूखे व अकाल की स्थिति से जूझ रहा है. इस क्षेत्र में 'पानी फाउंडेशन' ने स्थायी रूप से अकाल मुक्ति हेतु अभिनव अभियान प्रारम्भ किया जिसे भा.जे.सं. का सहयोग प्राप्त है. इस अभियान में इस क्षेत्र के प्रत्येक गाँव व कस्बे के छोटे-बड़े सभी महिला पुरुष जुड़ रहे हैं व जल के उपयोग, जल संग्रह व भूगर्भीय जल क्षमताओं के विकास में उनकी सहभागिता सुनिश्चित की जा रही है, जो 'प्रकृति वरदान है' की सत्यता को चरितार्थ करेगी.

# अकाल मुक्त महाराष्ट्र हेतु कृत-संकल्पित 'पानी फाउंडेशन'

वर्षा या अन्य स्रोतों से प्राप्त होने वाला जल प्रकृति का वरदान है किन्तु मनुष्य की यह जड़ मानसिकता ही है कि वह मूल्य रहित मिलने वाली वस्तुओं के प्रति बेदरकार रहता है. यही कारण है कि देश में ही नहीं विश्व के अनेक भागों में जल संकट बना ही रहता जो प्रकृति के कारण कम व मानव द्वारा अधिक सर्जित है. प्रकृति का स्वभाव तो सदैव ही प्रदान करने का रहा है किन्तु जल प्रबंधन के प्रति हमारी सामूहिक अनुत्तरदायी सोच का ही परिणाम है कि इसे हमने समस्या के रूप में अंकुरित तथा पल्लवित किया है.

देश के प्रख्यात फिल्म अभिनेता एवं निर्माता श्री आमीर खान एक अग्रणी सामाजिक वैज्ञानिक भी हैं. उनके द्वारा अभिनित या निर्मित सभी फिल्मों में समाज व देश के लिए सारगर्भित राष्ट्रीय एवं सामाजिक संदेश होता ही है. श्री आमीर खान द्वारा निर्मित तथा 25 कड़ियों में प्रस्तुत प्रख्यात टेलीविज़न धारावाहिक 'सत्यमेव जयते' से देश की विभिन्न समस्याओं को प्रभावी तरीके से उठाया गया जिसने देशवासियों को नहीं अपितु सरकारों को भी झकझोर दिया था. इस माध्यम से देशवासियों में जागृति लाने का कार्य अत्यंत ही प्रभावी तरीके से हुआ था जो हम सभी की स्मृतियों में आज भी है. धारावाहिक 'सत्यमेव जयते' के निर्माण काल में मिले अनुभवों से द्रवित हृदय आमीर खान ने किसी एक विषय पर गंभीरता से स्वयं कार्य करने हेतु संकल्प लिया. उन्होंने पत्नी श्रीमती किरण राव एवं निर्देशक श्री सत्यजीत भटकल के साथ मिलकर 'पानी फाउंडेशन' की स्थापना की व महाराष्ट्र को गहरे जल संकट व सूखे की स्थिति से उबारने का संकल्प लिया. उन्होंने महाराष्ट्र के निवासियों की सामूहिक सहभागिता से Water Shed Management परियोजना का शुभारंभ किया व राज्यवासियों को जागृत करने हेतु पिछले वर्ष 'सत्यमेव जयते वाटर कप स्पर्धा' की घोषणा की, जो उनकी परियोजना का अहम् हिस्सा भी है.

आम तौर पर देश में समस्यागत परियोजनाओं पर सरकारें एवं प्रशासन आर्थिक व अन्य संसाधन खड़े करते हैं जिनमें देशवासियों की सहभागिता कम होती है, फलस्वरूप योजनाओं की सफलताओं पर प्रश्न चिन्ह लगा रहता है. श्री आमीर खान की इस योजना की विशेषता यह है कि किसी तरह के आर्थिक व्यय या सहायता के बिना ग्रामवासियों को जल संकट के स्थायी हल हेतु वर्षा के जल का अपव्यय रोकने के साथ उसे भूगर्भ में उतारने व भूगर्भीय जल स्तर को ऊंचा उठाने के उपायों पर प्रशिक्षण प्रदान कर जल के श्रेष्ठ प्रबंधन व उपयोग सुनिश्चित किया जाता है जो सूखे प्रदेशों व जल संकट तथा सूखे से प्रभावित क्षेत्रों को हरभरा करने में कारगत साबित हो रहा है. योजना की संक्षिप्त रूपरेखा इस प्रकार है कि 'ग्रामसभा' इस स्पर्धा में भाग लेने हेतु आवेदन करती है. प्रत्येक 'ग्रामसभा' 2 महिलाओं सहित 5 व्यक्तियों को 4 दिन का प्रशिक्षण नियत समय व स्थल पर दिया जाता है, जो उनके ग्राम की समस्त ग्रामवासियों को प्रशिक्षण प्रदान करते हैं व सामूहिक श्रमदान से स्पर्धा का हिस्सा बनते हैं. स्पर्धा हेतु 100 अंकों का प्रश्न पत्र है. उदाहरणार्थ यदि किसी गाँव की जनसंख्या 3000 है तो उपलब्ध 40 एकड़ भूमि में 3 बांध निर्माण से गाँव 5 अंक प्राप्त करता है. इस तरह जल उपयोग/संरक्षण के विभिन्न निर्माणों हेतु निश्चित अंक दिये जाने का प्रावधान है. इस स्पर्धा में प्रोत्साहन राशि के रूप में प्रथम स्थान रू. 50 लाख, द्वितीय स्थान रू. 30 लाख एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले गाँव को रू. 20 लाख 'पानी फाउंडेशन' द्वारा दिये जाते हैं. एक सामाजिक संस्था द्वारा जल संकट की समस्या के स्थायी समाधान हेतु किए जा रहे अभिनव प्रयासों को महाराष्ट्र राज्य सरकार ने सराहा ही नहीं अपितु पूर्ण सहयोग भी प्रदान कर रही है. 'पानी फाउंडेशन' की 'देशवासियों की सहभागिता से देश की विकट समस्या का अंत' नामक यह परियोजना निश्चित ही सामाजिक उत्थान विकास से समृद्धि के नए द्वार खोल रही है.

गत 'सत्यमेव जयते वाटर कप स्पर्धा' में महाराष्ट्र के 3 तालुकाओं का चयन हुआ था. अमरावती जिले का वरुड, बीड जिले का अम्बेजोगाई एवं सतारा जिले का कोरेगाँव, जिनमें लगभग 300 गांवों का समावेश है, 116 गांवों ने स्पर्धा में हिस्सा लिया था. इस स्पर्धा के परिणाम स्वरूप इन गांवों में पिछली वर्षा ऋतु की समाप्ति पर 272 करोड़ रुपये की कीमत के जल (सतही या भूगर्भीय) की उपलब्धता बढ़ी. द्वितीय 'सत्यमेव जयते वाटर कप स्पर्धा' की घोषणा 2 जनवरी, 17 को की गई. इस हेतु 13 जिलों के 30 तालुकाओं का चयन हुआ जिसमें 3000 गाँव स्थित हैं, जिनमें से 2014 गांवों ने स्पर्धा में भाग लेने हेतु आवेदन किया है व लगभग 10000 व्यक्तियों को प्रशिक्षण देने का कार्य प्रारम्भ हो चुका है जो मार्च, 17 के अंत तक पूर्ण कर लिया जाएगा. प्रतियोगिता 8 अप्रेल से प्रारम्भ होकर 22 मई, 17 को समाप्त होगी.

बीजेएस ने अकाल समस्या पर महाराष्ट्र के मराठवाडा क्षेत्र में पूर्व में परिणामलक्षी कार्य किया है. सूखे से प्रभावित बीड जिले के 113 तालाबों को गहरा करने के साथ निकली गई उपजाऊ मिट्टी को 5000 एकड़ बंजर भूमि में फैलाया गया. एक महीने तक चले इस कार्य को नेतृत्व आदरणीय मुथ्थाजी ने प्रदान कर प्रतिदिन प्रगति का निरीक्षण व पर्यवेक्षण स्वयं उन्होंने किया. बीजेएस की जल समस्या पर स्थायी रूप से कार्य करने की योजना व सोच के परिणामस्वरूप, मुथ्थाजी ने श्री आमीर खान से मुलाक़ात लेकर सहयोग की पेशकश की. लिए गए निर्णय अनुसार 2000 गांवों में स्पर्धा के तहत किए गए श्रमदान कार्य में एक स्तर प्राप्त करने पर उस गाँव को 100 घंटों हेतु मशीने प्रदान की जाएगी जिसका सम्पूर्ण उत्तरदायित्व भारतीय जैन संघटना पर रहेगा. अन्य सामाजिक संस्थाओं के साथ महत्वपूर्ण परियोजना पर संयुक्त रूप से या सहयोगी के रूप में कार्य करने की बीजेएस की सदैव से ही परंपरा रही है. आशा है कि महाराष्ट्र अकाल मुक्ति अभियान में राज्यवासियों के यथार्थ परिश्रम से सूखे एवं अकाल का स्थायी रूप से निवारण होगा.

## सिकंदराबाद में भारतीय जैन संघटना का परिचय सम्मेलन संपन्न

भारतीय जैन संघटना सिकंदराबाद चैप्टर द्वारा द्वितीय परिचय सम्मेलन का आयोजन २४ फरवरी को किया गया. इसमें १४५ युवक-युवतियों ने भाग लिया. परिचय सम्मलेन के राष्ट्रीय संयोजक श्री अनिल रांका (राष्ट्रीय कार्यकरिणी सदस्य) एवं श्री रजनीश जैन (राष्ट्रीय कार्यकरिणी सदस्य) द्वारा परिचय सम्मेलन में प्रतिभागियों से संवाद कर, मंच से परिचय करवाया गया तथा श्रीमती कल्पना सुराणा ने सफल संचालन किया. बीजेएस द्वारा 'रिश्तों की नई पहल जैन मेट्रीमोनियल गेट टू गेदर' में युवक-युवतियों एवं अभिभावकों ने सहभागिता कर बीजेएस के इस आयोजन को सफलतम निरुपित किया. श्री घेवरचंद कोठारी के अथक परिश्रम से आयोजन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ. राज्याध्यक्ष श्री नवरत्नमल गुंदेचा, पूर्व राज्याध्यक्ष श्री निर्मल सिंघवी, महामंत्री श्री तरुण कर्नावट, सम्मेलन प्रधान संयोजक श्री अरविन्द नाहर सहित आन्ध्र तेलंगाना प्रांतीय पदाधिकारी, प्रतिनिधि, समाज बन्धु एवं कई शाखाओं के पदाधिकारी व बीजेएस कार्यकर्ता बड़ी संख्या में उपस्थित रहे.

## बीजेएस महाराष्ट्र राज्य स्तरीय सभा जालना में संपन्न

दिनांक 26 फरवरी 2017 को जालना में भारतीय जैन संघटना, महाराष्ट्र राज्य इकाई की आयोजित सभा में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रफुल्ल पारख ने स्मार्ट गर्ल, अल्पसंख्यकता के अधिकार व लाभ, iBuD-5, पानी फाउन्डेशन इत्यादि कार्यक्रमों के बारे में राज्य से आए हुए पदाधिकारियों से विस्तार से चर्चा की व उनके अनुभव भी सुने. महाराष्ट्र राज्य प्रभारी श्री हस्तीमल बंब ने अपने उद्बोधन में इस बात पर जोर दिया कि संघटना के कार्यकर्ताओं को गाँव स्तर पर अधिक कार्य करने की ज़रुरत है क्योंकि समाज हमारी सेवाओं की बहुत आवश्यकता है. राज्याध्यक्ष श्री अमर गाँधी ने आगामी वर्षों में राज्य में आयोजित किये जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों का वार्षिक केलेन्डर प्रस्तुत किया. आपने घोषणा की अगली सभा 28 मई, 2017 को दापोली (कोंकण) में आयोजित की जायेगी.

सभा में संपूर्ण राज्य से 200 से अधिक जिला व क्षेत्रीय पदाधिकारियों सहित राज्य अध्यक्ष श्री अमरजी गाँधी, राज्य प्रभारी श्री हस्तीमल बंब, राज्य सचिव महेंद्र मंडलेचा, जिलाध्यक्ष श्री प्रकाश बोरा, शहर अध्यक्ष शिखरचंद जैन आदि उपस्थित रहे व उपस्थित समस्त पदाधिकारियों ने राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रफुल्ल पारख से पद की गरिमा बनाये रखने व उद्देश्यों के अनुरूप कार्य करने की शपथ ली.

## २१ जोड़ों का सामूहिक विवाह छतीसगढ़ में

भारतीय जैन संघटना छतीसगढ़ द्वारा मार्च माह में 21 अविवाहित कन्याओं का सामूहिक विवाह रायपुर में संपन्न किया जायेगा. जिसमें जैन परिवार की बेटियों को प्राथमिकता दी जायेगी. इन 21 कन्याओं का चयन पहले आओ के अनुसार होगा. विवाह किये जाने वाले का परिवार संपूर्ण शाकाहारी होना आवश्यक है. विवाह हेतु संपूर्ण रिश्ता तय करने का कार्य सम्बंधित परिवार ही करेंगे.

यह जानकारी देते हुए भारतीय जैन संघटना छतीसगढ़ के राज्य अध्यक्ष श्री प्रमोदजी लुणावत ने बताया कि कन्याओं को गृहस्थी बसाये जाने हेतु सामग्री प्रदान करने के साथ ही वैवाहिक कार्यक्रम एवं बाजा, बारात, पंडित व सामग्री, एवं वर-वधू के परिवार को मिलाकर 100 लोगों के भोजन की व्यवस्था भी संघटना व्दारा ही की जायेगी.

इस पूरे विवाह कार्यक्रम का संपूर्ण आर्थिक खर्च श्री बसंत कटारिया व्दारा वहन किया जायेगा. एक ऐसी शख्सियत जिन्होंने स्वयं के पुत्र का विवाह बहुत ही कम व्यय और सादगी से किया लेकिन समाज की कन्याओं के उद्धार के लिए दोनों हाथों से धन की वर्षा करने के लिए तत्पर है, ऐसे महामना को व उनके परिवार को भारतीय जैन संघटना बहुत-बहुत साधुवाद देता है और शत-शत अभिनन्दन करता है. इच्छुक प्रत्याशी परिवार **श्री प्रमोद लुनावत**, रायपुर मोबा. **94255 03806** से संपर्क करे.


**"भारतीय जैन संघटना समाचार" के स्वामित्व एवं अन्य विवरण के सम्बन्ध में घोषणा**

फार्म 4 (नियम 8 देखिये)

| | | |
|---|---|---|
| 1. प्रकाशन का स्थान | : | मुथ्था टावर, लूप रोड, नियर डॉन वास्को चर्च, येरवडा, पुणे – 411 006 (महाराष्ट्र) |
| 2. प्रकाशन अवधि | : | मासिक |
| 3. मुद्रक का नाम | : | प्रफुल्ल पारख (भारतीय जैन संघटना के लिए) |
| (क्या भारतीय नागरिक है) | : | हाँ |
| (यदि विदेशी है तो मूल देश) | : | – |
| पता | : | श्रीधर कोआपरेटिव हाउसिंग सोसायटी, फ्लेट न.11, 3rd फ्लोर, DSK Toyota शो-रूम,मॉडल कालोनी, पुणे – 411 016 (महाराष्ट्र) |
| 4. प्रकाशक का नाम | : | प्रफुल्ल पारख (भारतीय जैन संघटना के लिए) |
| (क्या भारतीय नागरिक है) | : | हाँ |
| (यदि विदेशी है तो मूल देश) | : | – |
| पता | : | श्रीधर कोआपरेटिव हाउसिंग सोसायटी, फ्लेट न.11, 3rd फ्लोर, DSK Toyota शो-रूम,मॉडल कालोनी, पुणे – 411 016 (महाराष्ट्र) |
| 5. संपादक का नाम | : | प्रफुल्ल पारख (भारतीय जैन संघटना के लिए) |
| (क्या भारतीय नागरिक है) | : | हाँ |
| (यदि विदेशी है तो मूल देश) | : | – |
| पता | : | श्रीधर कोआपरेटिव हाउसिंग सोसायटी, फ्लेट न.11, 3rd फ्लोर, DSK Toyota शो-रूम, मॉडल कालोनी, पुणे – 411 016 (महाराष्ट्र) |

6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हो : --------

मै प्रफुल्ल पारख एतद व्दारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विशवास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य है |

दिनांक : 28.02.2017

प्रफुल्ल पारख
प्रकाशक के हस्ताक्षर

# प्रतिभाएँ - जो हमारी प्रेरणा के स्त्रोत हैं

## इनसे मिलिए

### श्री गौतम वागमाल बाफना, हुब्बल्ली (कर्नाटक)

राष्ट्रीय सचिव - भारतीय जैन संघटना

श्री गौतम बाफना का जन्म 1 जनवरी, 1971 को हुब्बल्ली (कर्नाटक) के संभ्रांत परिवार, पिता स्व. श्री वागमलजी एवं मातुश्री स्व. श्रीमती पानदेवी के यहाँ हुआ. आपकी शिक्षा हुब्बल्ली में हुई. वर्तमान में आप (Mutha Wagmal Bhuraji Group) MWB Group के डायरेक्टर हैं. आपने व्यावसायिक जीवन का शुभारंभ वर्ष 1992 में पारिवारिक व्यवसाय से किया. आपने MWB Group को उत्तर कर्नाटक के सर्वाधिक उत्पादन, थोक एवं खुदरा (Production, Wholesale & Retail) व्यवसायी के रूप में स्थापित किया, जो अनाज, दाल, चावल व मसाले आदि के व्यापार में संलग्न है.

आपका मुथा वागमल भूराजी संयुक्त परिवार पिछले 25 सालों की मेहनत एवं लगन से MWB Group आज सम्पूर्ण कर्नाटक में बड़े व्यावसायिक घराना (Business House) के रूप में पहचाना जाना जाता है.

एक युवा व्यवसायी जिसे आधुनिक एवं स्पर्धात्मक बाजार में स्वयं को स्थापित कर प्रगति के सौपान तय करना हो, सामाजिक जीवन को प्राधान्यता देना अत्यंत ही दुष्कर होता है किन्तु आप में नैसर्गिक रूप से विद्यमान सामाजिकता का ही परिणाम है कि आप बचपन से ही सामाजिक गतिविधियों में सक्रीय रहे हैं. आप ऑल इण्डिया जैन यूथ फेडरेशन (All India Jain Youth Federation®) के 4 वर्षों तक अध्यक्ष रहे व आपकी निष्ठा व लगन के कारण यह संस्था आज भी सुचारूरूप से कार्यरत है व अब तक 220000 से अधिक कृत्रिम पाँव (Artificial Limbs) लगा चुकी है. आप महावीर यूथ फेडरेशन, हुब्बल्ली के संस्थापक अध्यक्ष पद पर 1996 में नियुक्त हुए जिसमें 'रोटी घर' का संचालन जरूरतमंदों को भोजन कराने हेतु होता है. अब तक 5,50,000 जरूरतमंद लोगों ने इसकी सेवा का लाभ लिया हैं. लायंस इंटरनेशनल क्लब के आप वर्ष 2005 एवं 2006 के 2 साल के कार्यकाल में अध्यक्ष रहे. भारतीय जैन संघटना से आप वर्ष 2005 में जुड़े व 2011 एवं 2013 में आप बीजेएस के कर्नाटक राज्याध्यक्ष पद पर आसीन रहे. आपके नेतृत्व में गतिविधियों एवं कार्यक्रमों का अविरत एवं योजनाबद्ध पध्दति से संचालन किया गया जिससे समाज उत्थान एवं विकास को वेग प्राप्त हुआ है. वर्तमान में आप बीजेएस के राष्ट्रीय सचिव हैं एवं संस्था के महत्वपूर्ण कार्यक्रम 'स्मार्ट गर्ल' (Empowerment of Girls) कार्यक्रम के राष्ट्रीय संयोजक हैं.

विरल एवं आकर्षक व्यक्तित्व के धनि, मृदुभाषी, सादगी एवं सरलता की प्रतिमूर्ति, सफल व्यवसायी एवं कुशल सामाजिक नेतृत्वकार श्री गौतम बाफना आज की युवा पीढ़ी हेतु प्रेरणा के स्त्रोत है.

email - bjskarnataka@gmail.com

## हमें इनपर गर्व हैं

### श्री शांतिलाल बोरा, पुणे

श्री शांतिलाल बोरा का जन्म सन् 1948 में हुआ. आपने बिल्डिंग मटीरियल सप्लाई का व्यवसाय किया. युवाकाल से ही आप सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में सदैव अग्रणी रहे. श्री शान्तीलालजी मुथ्था सदैव से ही आपके प्रेरणा स्त्रोत व आदर स्थान में रहे. श्री मुथ्था के निर्देशन एवं सहचर्य में मिले सामाजिक कार्यों के अवसरों हेतु आप ईश्वर का आभार मानते हैं.

श्री बोरा भारतीय जैन संघटना शैक्षणिक पुनर्वसन प्रकल्प वाघोली,पुणे के चेयरमेन हैं और वर्ष 2006 से इस प्रकल्प के माध्यम से मानवीय सेवा के यज्ञ में आहुतियाँ दे रहे हैं. आपकी सोच, दूरदृष्टि एवं मेहनत का ही परिणाम है कि इस प्रकल्प ने एक नव स्वरूप प्राप्त किया है. आप शिक्षकों व कर्मचारियों की कार्य मानसिकता में आवश्यक परिवर्तन कर सकारात्मक एवं पोषक वातावरण निर्मित करने में सफल रहे हैं. इस प्रकल्प में संचालित विद्यालय एवं महाविद्यालय में लगभग 5000 विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते हैं और प्रतिवर्ष 100% परिणाम रहता है.

बीजेएस द्वारा पिंपरी,पुणे में संचालित विद्यालय के भी आप प्रभारी हैं. श्री बोरा अरिहंत प्रतिष्ठान, श्री संघ वडगांवशेरी के कार्याध्यक्ष, बीजेएस प्रबंध समिति के सदस्य, जैन कांफ्रेंस दिल्ली के कार्यवाहक समिति सदस्य, महाराष्ट्र पोलिस संघटना के सदस्य व अन्य अनेक संस्थाओं में सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं. "प.पू.आनंदऋषिजी महाराज" फिल्म में आनंदऋषिजी महाराज की भूमिका में आपने प्रभावी अभिनय दिया.

70 वर्षीय श्री बोरा सीमा पर खड़े सिपाही की तरह समाज सेवाओं का अनुशासित रूप से निष्पादन करते हैं. सामाजिक उत्तरदायित्वों के प्रति सदैव सचेत श्री बोरा वाघोली प्रकल्प के माध्यम से विद्यार्थियों एवं युवाओं के चरित्र निर्माण से देश को सुदृढ़ता प्रदान करने हेतु कृतसंकल्पित हैं.

email : shantilaljibora@gmail.com

## विशिष्ट प्रतिभा:

### देश का जल नाविक : राजेंद्र सिंह

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की ग्राम स्वराज्य की विचारधारा से ओत-प्रोत श्री राजेंद्र सिंह देश के प्रख्यात जल संरक्षक हैं. राजस्थान के अलवर जिले में जन्में श्री राजेन्द्र विनम्र व्यक्तित्व के धनी हैं व गाँवों के उत्थान एवं विकास का विचार उन्हें उनके विद्यालय काल से ही आने लगा था. इसी भावना से उन्होंने वर्ष 1985 में तरुण भारत संघ नामक संस्था का उत्तरदायित्व स्वयं लेकर अन्तराल गॉवों का भ्रमण प्रारम्भ कर ग्रामीण भारत की समस्याओं का अध्ययन किया. जल संरक्षण के उनके अंतहीन व व्यापक स्तर पर किये रचनात्मक कार्यों हेतु उन्हें अनेक सम्मानों से नवाज़ा गया है, जिसमें Ramon Magsaysay Award वर्ष 2001 में जल संरक्षण व प्रबंधन हेतु प्राप्त हुआ.

श्री राजेंद्र ने जल संरक्षण व प्रबंधन हेतु ग्रामीणों को प्रशिक्षण प्रदान किया. उनके प्रोत्साहन से ग्रामवासियों ने पुराने बांधों का नव-निर्माण किया. उनकी संस्था तरुण भारत संघ ने मिट्टी के व पक्के छोटे बड़े बांधों का निर्माण अलवर जिले के सरिस्का अभ्यारण्य में किया जिसके फलस्वरूप लगभग मृतप्रायः अर्वरी नदी बारहमासी बन गयी. इसी तरह उनके प्रयासों से मृतप्रायः नदियाँ जैसे -रुपारेल, सरसा, भागनी एवं जहाजवाली आदि को जीवनदान मिला. इसके अतिरिक्त राजस्थान के बंजर प्रदेश व 100 से अधिक सूखा ग्रस्त क्षेत्र कृषि से लहलहा उठे.

श्री राजेंद्र सिंह के नेतृत्व में उनकी संस्था अब मध्यप्रदेश, गुजरात एवं आंध्रप्रदेश में कार्यरत है. आपकी संस्था ने राजस्थान में वर्षा जल के संग्रहण हेतु 11 जिलों के 850 गाँवों में 4500 से अधिक मिट्टी के बांधों का निर्माण किया है. गांधीवादी विचारधारा के सच्चे अनुयायी श्री राजेंद्र सिंह गाँवों में जल पंचायत के आयोजन से अन्तराल ग्रामवासियों को जल के महत्व व उसके उपयोग व जल प्रबंधन पर जन-जागृत करते हैं.

हमारी धरोहर
(Hamaree Dharohar)

## धार्मिक अल्पसंख्यक समुदायों की समृद्ध विरासतों को संरक्षित करने हेतु अनुसंधान अध्येतावृत्ति (Fellowship) देने की योजना

### भूमिका (Introduction)

भारत के संविधान ने देश के समस्त नागरिकों को उनके धर्म एवं संस्कृति को मानने की स्वतन्त्रता तथा उनकी लिपि व भाषा के संरक्षण का अधिकार प्रदान किया है. देश के विभिन्न धार्मिक अल्पसंख्यक समुदायों, विशेषकर अल्पतम अल्पसंख्यकों (Micro Minorities) की समृद्ध विरासत एवं संस्कृति को संरक्षण देने तथा केलिग्राफी (Calligraphy) एवं सम्बंधित शिल्पों को सहायता प्रदान करने की आवश्यकताओं को अल्पसंख्यक मंत्रालय, भारत सरकार ने भलीभांति समझा है व उनकी संस्कृति एवं विरासत को संरक्षण प्रदान के प्रयोजन से आवश्यक अनुसंधान कार्यों हेतु "हमारी धरोहर" नामक नई योजना जो वर्ष 2014-15 से प्रारम्भ की गयी है के अंतर्गत अध्येतावृत्ति दी जा रही है.

### उद्देश्य (Objectives)

भारतीय संस्कृति की समग्र संकल्पना के तहत अल्पसंख्यकों की समृद्ध विरासतों (Heritages) का संरक्षण प्रदान करने, प्रतिष्ठित (Iconic) प्रदर्शनियों को क्युरेट (Curate) करने, साहित्य (Literature)/ पांडुलिपियों (Manuscript) एवं दस्तावेजों (Documents) के संरक्षण (Preservation), केलिग्राफ़ी (Calligraphy) आदि को सहायता एवं संवर्धन तथा अनुसंधान एवं विकास (Research & Development) को प्रोत्साहित करना.

### प्रत्याशी पात्रता (Eligibility)

i) प्रत्याशी अधिसूचित अल्पंख्यक समुदाय से होना चाहिए.

ii) प्रत्याशी ने स्नातकोत्तर डिग्री (PG) 50% या अधिक अंकों से प्राप्त की हो.

iii) प्रत्याशी ने विश्वविद्यालय/संस्थान में एम्.फिल. या पी.एच.डी. हेतु प्रवेश लिया हो या पंजीकरण करवा लिया हो.

iv) प्रत्याशी की आयु 35 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए.

### अध्येतावृत्ति (Fellowship)

i) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा निर्धारित वरिष्ठ शोधकर्ताओं के लिए अध्येतावृत्ति की दरों के आधार पर अध्येतावृत्ति देय होगी.

ii) अध्येतावृत्ति 3 वर्षों हेतु प्रदान की जायेगी. प्रथम दो वर्षों हेतु रू.25,000 एवं तृतीय वर्ष हेतु रू. 28,000 प्रति माह देय

### प्रत्याशी चयन (Selection Procedure)

एक जांच समिति (Screening Committee) योग्य प्रत्याशियों की सिफारिश करेगी जिसमें मानव संसाधन मंत्रालय, सांस्कृतिक मंत्रालय एवं अल्पसंख्यक मंत्रालय के निदेशकों सहित विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के प्रतिनिधि होंगे. प्रत्याशियों का चयन मेरिट, चुने हुए विषय व पात्रताओं के आधार पर होगा.

### आवेदन की पद्धत्ति (Mode of Application)

अल्पसंख्यक मंत्रालय, भारत सरकार, 11वां तल, पर्यावरण भवन, सी.जी.ऑ.काम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई-दिल्ली 110 003 पर आवेदन सादे कागज़ में सभी दस्तावेजों जैसे एम्.फिल. या पी.एच.डी. में पंजीकरण/प्रवेश के प्रमाण-पत्र, अनुस्नातक परीक्षा की अंक तालिका (Mark sheet), फोटो स्वयं सत्यापित, अल्पसंख्यक होने का प्रमाण या प्रत्याशी द्वारा घोषणा सादे कागज़ पर, बैंक एकाउंट का विवरण, आधार कार्ड की फोटो-प्रति, आय प्रमाण पत्र या प्रत्याशी द्वारा सादे कागज पर आय की घोषणा, स्थाई निवास का प्रमाण पत्र आदि के साथ प्रेषित करें व लिफाफे पर "हमारी धरोहर फेलोशिप" बड़े अक्षरों में लिखें.

## जैन शिक्षण संस्थाओं हेतु अल्पसंख्यक विषय पर कार्यशालाएं आयोजित हुईं

अल्पसंख्यक शिक्षण संस्थाओं के संवैधानिक अधिकारों, आर्थिक अनुदान की विभिन्न सरकारी योजनाओं व अल्पसंख्यक दर्ज़ा प्राप्त करने की विधि आदि विषय पर जानकारी प्रदान करने के उद्देश्य से महाराष्ट्र राज्य की जैन शिक्षण संस्थाओं का एक दिवसीय कार्यशालाओं का आयोजन 12 व 26 फरवरी, 2017 को क्रमशः औरंगाबाद एवं पुणे में हुआ, जिसमें क्रमशः 25 व 18 शिक्षण संस्थाओं के कुल 62 प्रतिनिधियों ने भाग लिया.

BJS MINORITY KNOWLEDGE CENTER के राष्ट्रीय संयोजक श्री सुदर्शन जैन, अमरावती -बडनेरा (महाराष्ट्र) एवं श्री निरंजन जुवांजैन, अहमदाबाद ने क्रमशः औरंगाबाद व पुणे कार्यशालाओं में प्रशिक्षण प्रदान किया व प्रतिभागियों के प्रश्नों के उत्तर व समाधान प्रस्तुत किये.

To,


**RNI No.-MAHBIL/2016/66409**
**Postal Registration No.-PCE / 089 / 2016-2018**
**License to Post without prepayment No.-WPP-255/31.12.2018**
**Published on 7th of Every Month**
**Posted at Market Yard PSO, Pune On- 10th of Every Month**



If undelivered Please Return To

BJS
Bharatiya Jain Sanghatana

Level IV, Muttha Towers, Loop Road, Near Don Bosco Church, Yerawada, Pune 411006
**Tel. : 020 4120 0600, 4128 0011, 4128 0012**
**Website:** www.bjsindia.org **Email :** info@bjsindia.org **Facebook :** www.facebook.com / BJSIndiacommunity **Tweeter :** BJS_India



मुद्रक तथा प्रकाशक – प्रफुल्ल पारख द्वारा भारतीय जैन संघटना के लिये प्रभात प्रिंटिंग वर्क्स, 427, गुलटेकड़ी, पुणे – 411037 से मुद्रित तथा मुथ्था टावर, लूप रोड, नियर डॉन वास्को चर्च, येरवडा, पुणे – 411006 से प्रकाशित. सम्पादक – प्रफुल्ल पारख, फ़ोन – (020) 41200600